पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2019 का आपराधिक आवेदन (डी. बी.) संख्या.268

रामगढ़ थाना कांड सख्या–104 वर्ष–2017, जिला–कैमूर (भभुआ) से संबंधित

= =

सोनू कुमार गुप्ता, पुरुष, आयु लगभग 30 वर्ष (पुरुष), पुत्र–रामेश्वर साह, निवासी मोहल्ला–पारसथुआ, थाना–रामगढ़, जिला–कैमूर, भभुआ

... ...अपीलकर्ता

बनाम

बिहार राज्य

.... उत्तरदाता/प्रतिवादीगण

= =

उपस्थिति

अपीलार्थी/ के लिए	:	श्री अजय कुमार ठाकुर, अधिवक्ता
	:	श्री मति वैष्णवी सिंह, अधिवक्ता
	:	श्री आर के सिंह नं.–2, अधिवक्ता
सूचक के लिए	:	श्री गजेंद्र नाथ ओझा, अधिवक्ता
राज्य के लिए	:	श्री सुजीत कुमार सिंह, सहायक लोक अभियोजक

= =

अपील – दोषसिद्धि के फैसले के खिलाफ दायर की गई, जिसके तहत संबंधित ट्रायल कोर्ट ने वर्तमान अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता की धारा 366 ए और 376 और यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा अधिनियम, 2012 की धारा 4 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए दोषी ठहराया है।

माना गया – जब किसी व्यक्ति की उम्र के स्थान पर यह बताने के लिए कोई दस्तावेजी सबूत उपलब्ध नहीं है कि वह नाबालिग है या बालिग है, तो मेडिकल परीक्षा बोर्ड की रिपोर्ट वैध सबूत है। (पैरा 39)

अभियोजन पक्ष ने स्पष्ट रूप से आरोपी व्यक्ति के खिलाफ मामला स्थापित किया है और इस प्रकार, अपीलकर्ता पर यह जिम्मेदारी आ गई है कि उसने ऐसा अपराध किया है या नहीं। उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों के आधार पर हमारी राय है कि अपीलकर्ता यह साबित करने में सक्षम नहीं है कि वह अपराध करने का दोषी नहीं है। (पैरा 47)

वर्तमान अपील में, ऊपर चर्चा की गई सहमति का स्पष्ट अभाव है क्योंकि पीड़ित लड़की नाबालिग है और नाबालिग की सहमति महत्वहीन है। (पैरा 51)

अपील खारिज की जाती है. (पैरा 54)

पटना उच्च न्यायालय का निर्णय /आदेश

= =

कोरमः माननीय न्यायमूर्ति श्री विपुल एम. पंचोली

और

माननीय न्यायमूर्ति श्री रमेश चंद मालवीय

मौखिक निर्णय

(निर्णयः माननीय न्यायमूर्ति श्री रमेश चंद मालवीय)

तिथीः–01–05–2024

वर्तमान अपील दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (इसके बाद 'संहिता' के रूप में संदर्भित) की धारा 374 (2) के तहत दायर की गई है, जिसमें 2017 के रामगढ़ थाना मामले संख्या 104 से उत्पन्न 2017 के सत्र परीक्षण (पॉक्सो) संख्या 27 के संबंध में भाभुआ में विद्वान विशेष न्यायाधीश, पॉक्सो अधिनियम, कैमूर द्वारा पारित दोषसिद्धि के फैसले और सजा के आदेश को चुनौती दी गई है, जिसके तहत संबंधित निचली अदालत ने वर्तमान अपीलार्थी को भारतीय पटना की धारा 366ए और 376 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए दोषी ठहराया है। दंड संहिता और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2012 की धारा 4, जिसके तहत और जिसके तहत अपीलार्थी को आई. पी. सी. की धारा 376 (2) (एन) के तहत अपराध करने के लिए दोषी पाया गया है और दोषी को 12 साल की सजा के साथ 5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। 50, 000/– और जुर्माने का भुगतान न करने पर 6 महीने के कठोर कारावास की अतिरिक्त सजा दी गई है। सुनीता कुमारी, जो इस वर्तमान मामले में सह–आरोपी भी हैं, पहले ही बरी हो चुकी हैं।

2. अभियोजन पक्ष के मामले के अनुसार, पीड़ित रश्मि देवी के साथ रामगढ़ बाजार गई थी, रश्मि देवी को सुनीता कुमारी का फोन आया जिसमें एक पुरुष ने बात करना शुरू कर दिया और कहा कि वह पीड़िता के मामा का पुत्र है और उसे दुर्गा चौक पर लेने आ रहा है। इसके बाद, पीड़ित रश्मि देवी के साथ दुर्गा चौक गई और रश्मि देवी अस्पताल के लिए रवाना हो गई। सुनीता कुमारी दुर्गा चौक पर थी और पीड़ित किसी व्यक्ति से मिला, जिसके सिर पर तौलिया लपेटा हुआ था, जो बाइक पर बैठा था, जिसमें सुनीता कुमारी ने पीड़ित को पीने के लिए कुछ पानी दिया था, जो कथित तौर पर नशे में था और फिर उसे आरोपी व्यक्ति अपनी बाइक पर ले गया। यही जानकारी बाद में 07.05.2017 पर रामगढ़ के पुलिस स्टेशन को दी गई थी।

3. लिखित शिकायत के आधार पर, 2017 का रामगढ़ थाना मामला संख्या 104 दिनांक 07.05.2017 को दर्ज किया गया और उसके बाद जांच अधिकारी ने जांच शुरू की। जाँच के बाद जाँच अधिकारी ने वर्तमान अपीलार्थी के खिलाफ आरोप पत्र प्रस्तुत किया।

4. मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष ने 17 गवाहों–पीडब्लू 1–रामराज सिंह, पीडब्लू 2–पीड़ित, पीडब्लू 3–डॉ. बदरूद्दीन अंसारी, पीडब्लू 4–डॉ. कृष्ण मोहन सिंह, पीडब्लू 5–डॉ. श्रीमती अंबर, पीडब्लू 6–डॉ. मनीष कुमार, पीडब्लू 7–बेबी देवी, पीडब्लू 8–संतोष कुमार गुप्ता, पीडब्लू 9–रेशमी देवी, पीडब्लू 10–विद्या कुमारी, पीडब्लू 11–राजेश कुमार, पीडब्लू 12–रंजीत कुमार यादव, पीडब्लू 13–बुद्धिराम सिंह से पूछताछ की है। पीडब्लू–14 सुरेंद्र यादव, पीडब्लू–15 विश्वामित्र उर्फ खन्नू यादव, पीडब्लू–16 विनोद कुमार सिंह और पीडब्लू–17 इस्तियाक खान। अभियोजन पक्ष की ओर से दस्तावेजी साक्ष्य के रूप में, दस्तावेजी साक्ष्य के रूप में, लिखित आवेदन पर सूचना देने वाले के हस्ताक्षर, प्रदर्शन–2, दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के तहत बयान पर पीड़ित के हस्ताक्षर, 16 प्रदर्श–3, पीड़ित की चिकित्सा रिपोर्ट, प्रदर्शन–4 पीड़ित के एक्स–रे के लिए भेजा गया पत्र, फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला को भेजा गया पत्र (विरोध के साथ), प्रदर्शन–6 सूक्ष्म परीक्षण रिपोर्ट, पीड़ित की दंत चिकित्सा परीक्षा रिपोर्ट, प्रदर्शन–7, पटना उच्च न्यायालय में प्रस्तुति पर गवाह–2/1 को प्रदर्शित करें। जब्ती सूची राजेश कुमार के हस्ताक्षर, जब्ती सूची में गवाह रंजीत कुमार यादव के हस्ताक्षर प्रदर्शित करें, मोबाइल प्रस्तुति सह जब्ती सूची प्रदर्शित करें, मोबाइल का सीडीआर प्रदर्शित करें दिनांक 25.04.2017 से 11.05.2017।(विरोध सहित), सीआरपीसी की धारा 164 दिनांक 25.04.20 के तहत पीड़ित का प्रदर्श–10 बयान, प्रदर्श–11 औपचारिक प्राथमिकी, लिखित आवेदन पर प्रदर्श–12 समर्थन और डीडब्ल्यू–1 लालजी बिंद और डीडब्ल्यू–2 बेचू बिंद के साथ संहिता की धारा 313 के तहत आरोपी का आगे का बयान भी दर्ज किया गया। मुकदमे के समापन के बाद, निचली अदालत ने वर्तमान अपीलार्थी को उपरोक्त अपराधों के लिए दोषी ठहराया जैसा कि यहाँ ऊपर कहा गया है।

5. सुना गया, श्री अजय कुमार ठाकुर, विद्वान वकील, अपीलार्थी की ओर से श्रीमती वैष्णवी सिंह और श्री आर. के. सिन्हा 2 और श्री सुजीत कुमार सिंह ने सूचना देने वाले के विद्वान वकील श्री गजेंद्र नाथ ओझा के साथ राज्य के लिए एपीपी सीखा। अपीलार्थी के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि, वर्तमान मामले में, अपीलार्थी को इस मामले में गलत तरीके से फंसाया गया है और आगे प्रस्तुत किया कि उसका पीड़ित और सह–अभियुक्त सुनीता कुमारी के साथ कोई संबंध नहीं है। केवल यह आरोप लगाया गया है कि आरोपी सोनू कुमार गुप्ता उसे अपने घर ले गया जहां उसकी पत्नी भी उसके

साथ रह रही थी और सात दिनों तक उसके साथ बलात्कार किया। उन्होंने आगे कहा ऐसा कोई मामला नहीं है कि कथित पीड़िता का बलात्कार किसी और ने किया था न कि आरोपी सोनू कुमार गुप्ता ने।

6. विद्वान वकील श्री ठाकुर ने प्रस्तुत किया कि आरोपी व्यक्ति के परिवार और पीड़ित के बहनोई के बीच उसकी चश्मे की दुकान से सामान उधार लेने के लिए पिछली दुश्मनी थी जो आरोपी व्यक्ति की दुकान के पास थी। उन्होंने आगे कहा कि पीड़िता अपनी मर्जी से बाहर गई थी और उसे कोई कहीं भी नहीं ले गया था या यहां तक कि आरोपी व्यक्तियों द्वारा उसका बलात्कार या अपहरण भी नहीं किया गया था। उन्होंने आगे तर्क दिया कि पीड़िता को उसके पिता के लिखित आवेदन के अनुसार 12 साल की नाबालिग कहा जाता है, लेकिन इस संबंध में ऐसा कोई दस्तावेजी सबूत पेश नहीं किया गया है। मेडिकल बोर्ड ने पीड़ित की उम्र निर्धारित की है, जो केवल एक राय है और पीड़िता की उम्र निर्धारित करने के लिए एक मजबूत आधार नहीं है।

7. अपीलार्थी के विद्वान वकील ने आगे तर्क दिया कि पीड़ित ने अपने बयान में कहा कि उसके साथ बलात्कार किया गया था और आरोपी व्यक्तियों द्वारा उसे पीटा भी गया था, लेकिन पीड़ित के शरीर पर चोट का कोई निशान नहीं है, और पीड़ित पर संघर्ष का कोई संकेत भी नहीं है। पीड़िता ने आगे कहा कि वह हर समय चिल्ला रही थी लेकिन उसकी चिल्लाहट को किसी ने नहीं सुना और जब अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा अपहरण किया गया तो 7 दिनों तक कोई उसे बचाने नहीं आया।

8. अपीलार्थी के विद्वान वकील ने आगे तर्क दिया कि पीड़ित के बयान में विभिन्न विसंगतियां हैं क्योंकि पुलिस के समक्ष उसके बयान और संहिता की धारा 164 के तहत आरोपी व्यक्तियों के माता–पिता के नाम का खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन मुकदमे में, उसने आरोपी व्यक्ति के माता–पिता के नाम का खुलासा किया है। सी. डी. आर. को जांच के लिए भी पेश नहीं किया गया था कि क्या आरोपी के मोबाइल नंबर का उपयोग सुनीता कुमारी के मोबाइल फोन से संपर्क करने के लिए किया गया था ताकि पीड़िता को दुर्गा चौक लाया जा सके, जहां कथित तौर पर उसका अपहरण किया गया था। वह आगे प्रस्तुत करता है कि सूचना देने वाला घटना का चश्मदीद गवाह नहीं है।

9. इस स्तर पर विद्वान वकील ने भी तर्क दिया और प्रस्तुत किया कि अभियोजन पक्ष अपीलार्थी/अभियुक्त के खिलाफ मामले को सभी उचित संदेह की छाया से परे साबित करने में विफल रहा है, लेकिन निचली अदालत ने अपीलार्थी के खिलाफ दोषसिद्धि और सजा के आदेश का विवादित निर्णय पारित किया है और इसलिए, इसे रद्द कर दिया जाए और अलग कर दिया जाए।

10. दूसरी ओर, विद्वान ए पी पी और सूचना देने वाले के विद्वान वकील ने वर्तमान अपील का जोरदार विरोध किया है। सूचक के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि आरोपी सोनू कुमार गुप्ता ने पीड़िता के मामा का पुत्र के नाम अपना चेहरा ढककर पीड़िता को लुभाने के लिए गलत इस्तेमाल किया। और उसे अपने घर ले गया और सात दिनों तक उसके साथ बलात्कार किया और बाद में अपने लोगों माता–पिता और उसकी पत्नी के विरोध पर वह उसे रामगढ़ ले आया और वहां छोड़ दिया। भभुआ के सदर अस्पताल में चिकित्सा जांच की गई जिसमें उसके शरीर और जननांगों पर चोटें पाई गईं और भेदक यौन हमले के सबूत भी पाए गए। संहिता की धारा 164 के तहत पीड़िता द्वारा दिए गए बयान में अभियोजन पक्ष की कहानी का भी समर्थन किया गया है, जिसमें उस आरोपी को शामिल किया गया है जो उसे सुनीता कुमारी की मदद से अपनी मोटरसाइकिल पर परसाथुआ ले गया था, जिसने उसे पीने के लिए औषधीय पानी दिया था जो उसके द्वारा नशे में था और उसके बाद पीड़िता कुछ भी करने में सक्षम नहीं थी और उसे ले जाया गया था। यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि पीड़ित के साथ–साथ उसके माता–पिता ने अपीलार्थी के खिलाफ निचली अदालत के समक्ष उचित संदेह से परे गवाही दी है और निचली अदालत द्वारा दोषसिद्धि और सजा के आदेश के विवादित निर्णय को पारित करते समय कोई स्पष्ट त्रुटियां नहीं की गई है। विद्वान एपीपी और सूचना देने वाले के विद्वान वकील ने इसलिए आग्रह किया कि वर्तमान अपील को खारिज कर दिया जाए।

11. पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ता को सुना और अभिलेख पर रखी गई सामग्री को देखने के बाद, यह सामने आएगा कि अपीलार्थी के विरूद्ध मुकदमा साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष के 17 गवाहों से पूछताछ की थी।

12. पीडब्लू–1 पीड़ित लड़की का पिता (सूचक) होता है। घटना के समय वह दुर्ग में था और उसके पुत्र ने उसे बताया कि सूचक (पीड़ित) की बेटी का अपहरण कर लिया गया है। उसे पता चला कि सुनीता कुमारी पीड़िता को यह कहते हुए दुर्गा चौक ले गई कि पीड़िता के मामा का पुत्र उसे लेने आया था और बाद में लड़के ने उसका अपहरण कर लिया। उन्होंने आगे कहा कि सुनीता कुमारी ने पीड़ित का मोबाइल फोन तोड़ दिया। उसने आरोपी सोनू गुप्ता का नाम लिया है और आरोपी की पहचान भी की है। उन्होंने आगे कहा कि सुनीता कुमारी के पिता दयानंद उनके पड़ोसी और चचेरे भाई हैं और उनके बीच अच्छे पारिवारिक संबंध नहीं हैं और दोनों परिवारों के बीच झगड़ा है। सूचक की तीन बेटियाँ हैं। उन्होंने आगे कहा कि सूचना देने वाले की पत्नी घटना की तारीख को घर पर नहीं थी सूचना देने वाले के ससुर की मृत्यु हो गई और सूचना देने वाले की पत्नी अपने पिता के अंतिम संस्कार में वहां थी और सूचना देने वाले की पत्नी पीड़ित को अपने साथ नहीं ले गई थी। सूचक ने अपने बयान में आगे

कहा कि वह चार साल से दुर्ग में रह रहा है। सूचक और उसके परिवार के सदस्यों ने पीड़ित की तलाश की लेकिन वह नहीं मिली और उन्हें पता नहीं चला कि पीड़ित पराशथुआ में है। सूचना देने वाले को नहीं पता कि सुनीता कहाँ पढ़ रही है। पीड़िता ने पुलिस के सामने बताया कि वह परसाथुआ में 01.05.2017 से 08.05.2017 तक थी। सूचक कई बार परसाथुआ गया लेकिन उसने सोनू गुप्ता का घर नहीं देखा, उसने सोनू गुप्ता को पुलिस स्टेशन में देखा और उसे बताया गया कि सोनू गुप्ता और उसकी पत्नी पीड़िता को दुर्गा चौक ले आए और चले गए। पुलिस स्टेशन जाते समय सूचक ने अपनी बेटी को पुलिस स्टेशन जाते हुए देखा और उसने पीड़िता को अपने साथ पुलिस स्टेशन ले गया। पीड़िता दो दिन तक पुलिस थाने में रही। सब–इंस्पेक्टर, चौकीदार और सूचक आगे की जांच के लिए सोनू गुप्ता की कपड़े की दुकान पर गए जो परसथुआ बाजार में थी।

12.1. अपनी जिरह में उन्होंने कहा है कि वे छत्तीसगढ़, दुर्ग में थे। उन्होंने अपनी बेटी से जो सुना उसके आधार पर प्राथमिकी दर्ज की है जिसने उन्हें सोनू गुप्ता के बारे में बताया था। वह 40 बीघा की दूरी पर पुलिस स्टेशन में अपनी बेटी से मिला। उन्होंने कहा कि पुलिस स्टेशन के पूर्व में 40 से 50 बीघा की दुकान है और पुलिस स्टेशन के पूरब में बस्तियाँ हैं। उन्होंने आगे कहा कि वह अपनी बेटी से उस स्थान पर मिले जहां पूरब में एक हाई स्कूल है, पश्चिम में एक दुकान है और उत्तर में भी एक दुकान है और दक्षिण में एक सड़क है जो नुव बक्सर जाती है। वह अपनी बेटी/पीड़ित से मिला और वह अकेली थी। सूचक के गांव के एक लड़का ने इंटर कॉलेज में पढ़ने वाली पीड़िता को देखा है। वह सूचक को पीड़िता के पास ले आया जहाँ वह बैठी थी और वहाँ से सूचक उसे पुलिस स्टेशन ले गया जहाँ उसने अपना बयान दिया कि सोनू गुप्ता ने उसका अपहरण किया और उसके साथ बलात्कार किया और बाद में उसे रामगढ़ ले आया और चला गया।

13. पी. डब्ल्यू. 2 वर्तमान मामले का पीड़ित है। उसने कहा है कि सुनीता कुमारी उसकी चचेरी बहन है और सुनीता कुमारी 30.04.2017 को उसके घर आई और उसे सुबह अपनी बहन के दाखिला लेने के लिए 01.05.2017 को रामगढ़ जाने के लिए कहा। जब पीड़िता ने जाने से इनकार कर दिया, तो सुनीता कुमारी ने दो मोबाइल नंबर लिखे (i) 7979786053 और दूसरा उसे याद नहीं है और कहा कि यह उसके भाई मुकेश का है और उसे उस नंबर पर उससे बात करने के लिए कहा। बाद में सुनीता कुमारी ने रेशमी देवी के मोबाइल पर कॉल किया और उन्हें रामगढ़ जाने के लिए कहा। इसके बाद जब पीड़िता रेशमी भाभी के साथ रामगढ़ बाजार गई तो उसे फिर से रेशमी देवी के मोबाइल पर कॉल आया, जो सुनीता के मोबाइल से आया और किसी अनजान लड़के ने पूछा "तुम कहाँ हो? ", तब पीड़ित ने कहा कि यह एक गलत नंबर था, जिस पर उसने कहा, "मैं आपका चचेरा भाई रामलखन हूं और आपकी दादी की मृत्यु हो

गई है और आपकी माँ वहाँ गई हैं और आपको वहाँ आने के लिए बुलाया है", फिर वह रामगढ़ दुर्गा चौक गई। सुनीता कुमारी वहाँ खड़ी थी, उसने पीड़िता को बोतल से कुछ पानी दिया और पानी पीने के बाद वह नशे में धुत हो गई और सुनीता जो कुछ भी कह रही थी वह सही लग रहा था। सुनीता ने उसे अपने चचेरे भाई की बाइक पर जाने के लिए कहा, जो शॉल से अपना मुंह ढके हुए था, इसलिए सुनीता ने उसे बाइक पर बिठाया। फिर लड़का उसे पराशथुआ (अपने घर) ले गया और उसे अपने घर में बंद कर दिया, जहाँ वह चिल्ला रही थी। उस लड़के का नाम सोनू गुप्ता (आरोपी) है और उसने रात में उसके साथ जबरन बलात्कार किया और दूसरी रात जब उसकी पत्नी आई तो उसने चिल्लाना शुरू कर दिया और सोनू गुप्ता से पूछा कि वह लड़की को घर कहां से लाया है, फिर उसने कहा कि वह उसे जहां से भी लाएगा, वह सुबह उसे वहीं छोड़ देगा। इसके बाद सोनू गुप्ता ने पीड़ित को एक गोली दी। गोली खाने के बाद उसे चक्कर आने लगे और बाद में वह बेहोश हो गई। पीड़ित ने आगे कहा है कि 01.05.2017 से 08.05.2017 तक, उसने उसे अपने कमरे में रखा और उसका यौन शोषण किया। पीड़िता ने आगे कहा कि जब सोनू गुप्ता के माता–पिता ने उसे धमकी दी, तो वह उसे रामगढ़ छोड़ गया और जब वह पुलिस स्टेशन जा रही थी, तो उसके भाई और पिता उससे मिले और उसे पुलिस स्टेशन ले गए। पीड़िता ने आगे कहा है कि उसका बयान दिन में 12 बजे 09.05.2017 को दर्ज किया गया था और उसका बयान 11.05.2017 को अदालत में दर्ज किया गया था। पीड़िता ने संहिता की धारा 164 के तहत दर्ज बयान पर अपने हस्ताक्षर की पहचान की है और न्यायालय में दिया गया बयान जिसे प्रदर्श–2 के रूप में चिह्नित किया गया है। गवाह ने कहा है कि उसकी मेडिकल जांच मोहनिया सरकारी अस्पताल में 11.05.2017 को की गई थी और उसने आरोपी की पहचान भी कर ली है।

13.1. अपनी जिरह में, इस गवाह ने कहा है कि 01.05.2017 से पहले भी, वह अपनी माँ के साथ रामगढ़ गई थी, लेकिन घटना से पहले कभी परसाथुआ नहीं गई थी। उसने आगे कहा है कि सोनू (अपीलकर्ता) के माता–पिता पारसथुआ के घर में नहीं रहते हैं। उसे नहीं पता कि उसके दो भाई वहाँ पढ़ रहे हैं या नहीं। पीड़िता को अपने भाइयों के नाम पता चले जो उसने बंद कमरे से सुने। इस पीड़िता ने आगे कहा है कि जब वह पराशथुआ के घर के अंदर गई तो वह होश में नहीं थी और जब वह घर के अंदर गई तो उसे होश आ गया। इस पीड़ित ने यह भी कहा है कि आरोपी की पत्नी उस घर में 02.05.2017 से 08.05.2017 तक थी। आरोपी अपनी पत्नी के साथ रहता था और उसे धमकी भी देता था। उसने आगे कहा कि आरोपी रात में उसके पास आएगा। पीड़िता ने यह भी बताया कि वह एक बाइक पर परसाथुआ से रामगढ़ आई थी, जहां पीड़िता बाइक पर बैठी थी और आरोपी की पत्नी उसके पीछे बैठी थी।

14. पीडब्लू–3, 4, 5 और 6 डॉक्टर हैं, जिनमें मेडिकल बोर्ड के डॉ. बदरूद्दीन अंसारी के साथ डॉ. के. एम. सिंह, डॉ. मनीष कुमार और डॉ. श्रीमती अंबर शामिल हैं ने 1:41 पी.एम पर 11.05.2017 को पीड़ित की जांच की और उन्होंने पाया किः .

1) दाहिने हाथ की पामर सतह की मध्य सीमा के साथ दो चोटें।

i) आयाम 2.5 से. मी. x 5 से. मी. पीला रंग

(ii) 1.25 सेमी x .75 से. मी. पीला रंग

2) दाहिने हाथ की पामर सतह के हिपॉथिनर क्षेत्र पर छिद्रित घाव। .75 सेमी व्यास। आस–पास के क्षेत्र में सूजन और कोमलता के साथ नरम लाल पपड़ी का गठन।

3) दाहिनी बीच की उंगली पर टर्मिनल (अपठ्य) की पामर सतह पर घाव। .75 सेमी व्यास नरम लाल पपड़ी, सूजन और कोमलता के साथ।

4) बाएँ कान के पीछे एक चोट 2.5 सेमी x 2.5 सेमी। चोट की उम्रः– एक से दो सप्ताह

कारणः– चोट संख्या 1 और 4 कठोर कुंद वस्तु और 2 और 3 नुकीले पदार्थ द्वारा सब प्रकृति में सरल हैं।

आंतरिक जाँचः डॉ. मिस अंबर के साथ उर्मिला कुमारी ए.एन.एम., सहायक के द्वारा किया गया।

दानेदार ऊतक, कोलेजन ऊतक और एक से दो सप्ताह की आयु के मवाद के साथ कवर किए गए पीछे के कांटे पर मध्य–रेखा फटने पर चोट। एक उपकला टैग लगभग 1 सेमी ट्रॉयटस में ऊपरी बाएँ पार्श्व से लटका हुआ है। आकार में एपिथेलेमियम का अनियमित मार्जिन जो हेलिंग कच्चा बिस्तर दिखा रहा है। हाइमेन मौजूद नहीं था।

आयु–दो सप्ताह तक

सहायक और जघन बाल मुख्य रूप से लैबिया वृद्धि और स्तन और इलियाक की ऊंचाई के साथ बिना किसी अलगाव के उनके समोच्च, पैपिला बहुत छोटे होते हैं।

सूक्ष्मदर्शी परीक्षण दो–तीन उपकला कोशिकाओं को दर्शाता है। एरिथ्रोसाइट्स और पुस कोशिका–नील, शुक्राणु–जीवित या मृत नहीं पाए गए। के. एम. पैथोलॉजिस्ट एस. डी. एच., मोहनिया द्वारा दी गई रिपोर्ट। मृतकों का एक्स–रे नहीं मिला। रिपोर्ट दाएँ और बाएँ कंधे का जोड़ और दोनों घुटने का जोड़ और श्रेणी कलाई, दोनों अपने संबंधित एपिफिसिस को पार्श्व के लिए केन्द्र को कम करते हैं। एपिकॉन्डाइल इलियाक क्रेस्ट और एडियल ट्यूबरसिटी दिखाई दिया है। शारीरिक विशेषता के आधार पर, मासिक धर्म के इतिहास में यौन चरित्र दंत चिकित्सा और रेडियो–तार्किक परीक्षा के विकास के कारण उसकी आयु 12–14 वर्ष है। **बलपूर्वक योनि प्रवेश, शिश्न प्रवेश के साक्ष्य से इंकार नहीं किया जा सकता है। एफ. एस. एल. रिपोर्ट का इंतजार है। संघर्ष का संकेत मौजूद है।**

राइन–प्रेग परीक्षण नकारात्मक है।

14.1 उन्होंने आगे कहा कि लड़की के बयान को उसकी रिपोर्ट के माध्यम से सत्यापित किया गया था। उन्होंने एक रिपोर्ट दी और कहा कि अगर कोई कुंवारी लड़की के साथ जबरन यौन संबंध बनाता है, तो रिपोर्ट में बताई गई चोटें निश्चित रूप से लगेंगी। संघर्ष का भी संकेत है। चोटों और खरोंच बहुत सतही चोटें हैं और सतही चोटों का निर्माण नहीं किया जा सकता है। घर्षण के मामले में, त्वचा की

बाहरी परत आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो जाती है। यदि शरीर के किसी भी हिस्से को रगड़ दिया जाता है, तो घर्षण पंचर हो सकता है और ईंटों या टाइलों जैसी नुकीली सतह पर घाव हो सकता है। पीड़िता का संभावित आयु 12–14 वर्ष है। एक 14 वर्षीय लड़की को दूसरा दाढ़ है। दो दाढ़ क्षेत्र ऊपर और दो नीचे हैं। तीसरा दाढ़ 17 साल की उम्र के बाद बढ़ता है। दाढ़ के अलावा, 14 साल की उम्र में ऊपर पांच दांत और नीचे पांच दांत होते हैं। रिपोर्ट में ऊपर 7 और नीचे 7 दांत हैं। रिपोर्ट के अनुसार, दोनों पक्षों सहित, में ऊपर 14 दांत एवं नीचे 14 दांत हैं।

14.2. अपनी प्रतिपरीक्षा में, पीडब्लू–3 ने कहा है कि उसे पुलिस से जांच के लिए एक मांग पत्र मिला था और उसने एक्स–रे रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद डॉक्टरों के बोर्ड के साथ रिपोर्ट तैयार की है। गवाह ने यह भी कहा है कि उसने पुलिस द्वारा दर्ज बयान नहीं लिखा था। उन्होंने यह भी कहा है कि घाव विकृत घाव नहीं हैं और उन्हें बनाया नहीं जा सकता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि पीड़ित द्वारा कोई मामले का इतिहास नहीं बताया गया है।

15. पीडब्लू–4 डॉ. कृष्ण मोहन सिंह चिकित्सा बोर्ड के सदस्य, जिनके माध्यम से पीड़ित की आयु सत्यापन और चिकित्सा जांच की गई थी। इस गवाह ने अपने साक्ष्य में कहा है कि 11.05.2017 को, उन्हें उप–मंडल अस्पताल, मोहनिया में चिकित्सा अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था, और उन्होंने डॉ. बदरूद्दीन अंसारी के मांग पत्र के आधार पर पीड़ित की योनि के स्वाब की जांच की। शुक्राणु जीवित या मृत नहीं पाया गया था। इस गवाह ने अपनी जांच रिपोर्ट की पहचान की है जो उसकी अपनी लिखावट (प्रदर्श–6) में है। उसने अपनी जिरह में कहा है कि वह जाँच से पहले पीड़ित से परिचित नहीं था और उसके सामने केवल योनि का स्वाब पेश किया गया था।

16. पीडब्लू नंबर 5 डॉ. श्रीमती अंबर, जो मेडिकल बोर्ड के सदस्य थे ने अपने साक्ष्य में कहा है कि वह उपखंड अस्पताल, मोहनियन में महिला चिकित्सा अधिकारी के रूप में 11.05.2017 से तैनात थी और मेडिकल बोर्ड की सदस्य थी, जिसका गठन पीड़ित (राम राज सिंह की बेटी, गांव–इसरी, पुलिस स्टेशन–रामगढ़, जिला–कैमूर के निवासी) की जांच के लिए किया गया था और उसने उर्मिला कुमारी ए. एन. एम. की मदद से 1:44 पी. एम. बजे पीड़िता की जांच की और पाया– दानेदार ऊतकों, कोलेजन ऊतकों और मवाद के मोती से ढके पीछे के कांटे पर बीच की रेखा पर चोट लगी–एक से दो सप्ताह की उम्र और उपकला टैग ऊपरी बाएं पार्श्व परिचय से लगभग 1 सेमी आकार में लटकता है। चोट में अनियमित मार्जिन एपिथेलियम होता है जो उपचार करने वाले कच्चे बिस्तर को दर्शाता है। हाइमेन मौजूद नहीं है। उसके सहायक और जांघ का बाल बहुत विरल और हल्के भूरे रंग के होते हैं। उसके गुप्तांग के बाल मुख्य रूप से

लैबिया के साथ होते हैं। स्तन आइसोला का विस्तार और उन्नयन उनके समोच्च को अलग किए बिना, पैपिला बहुत छोटा है। उन्होंने अपनी रिपोर्ट दी है जिसे प्रदर्श 5 के रूप में चिह्नित किया गया है।

16.1. इस गवाह ने जिरह में कहा है कि पीड़ित के शरीर पर पाया गया घाव ठीक हो गया था। इस गवाह ने आगे कहा है कि एक बार हाइमेन टूट जाने के बाद, यह वापस नहीं आता है और उसने हाइमेन के टूटने का समय दर्ज नहीं किया है। इस गवाह ने यह भी कहा है कि घाव ठीक हो गया और हल्का गुलाबी रंग का हो गया और उस घाव के चारों ओर सूजन थी जहाँ से मवाद आ रहा था जो बाहर से दिखाई दे रहा था।

17. पीडब्लू–6, डॉ. मनीष कुमार, एक दंत चिकित्सक और मेडिकल बोर्ड के सदस्य ने कहा है कि उन्होंने पीड़ित के दांतों की स्थिति की जांच की थी और पाया था कि उसके सात ऊपरी और सात निचले दांत थे और उसकी उम्र 12–14 वर्ष हो सकती है। इस गवाह ने अपनी रिपोर्ट की पहचान प्रदर्श–7 के रूप में की है। इस गवाह ने यह भी कहा है कि बच्चों को 14 साल की उम्र में दूसरा दाढ़ हो जाता है।

18. पीडब्लू–7, जो अपीलार्थी की पत्नी हैं, ने कहा कि वह पीड़ित के बारे में नहीं जानती थी और अगर कोई घटना हुई थी, तो उसे इसके बारे में कुछ नहीं पता था। अभियोजन पक्ष के अनुरोध पर इस गवाह को पक्षद्रोही घोषित किया गया था।

18.1. अपनी प्रतिपरीक्षा में, वह बताती है कि उसकी शादी को 15–16 साल हो गए थे और उसके पास लगभग 4–5 साल की उम्र के 2 लड़के और लगभग 12–13 साल की उम्र की 2 लड़कियां हैं। उसने आगे कहा कि अपीलार्थी कपड़ा व्यवसाय में है और इस मामले को छोड़कर उसके खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं है और उसके अपने पति (अपीलार्थी) के साथ अच्छे संबंध हैं। उसने यह भी कहा कि वह सुनीता कुमारी नाम की लड़की के बारे में कुछ नहीं जानती थी।

19. P.W.–8, जो अपीलार्थी का भाई है, ने कहा कि वह इस अपराध की पीड़ित को नहीं जानता है और उसने उसका नाम भी नहीं सुना है और उसे यह भी नहीं पता कि ऐसी कोई घटना हुई है या नहीं। अभियोजन पक्ष के अनुरोध पर, इस गवाह को भी पक्षद्रोही घोषित कर दिया गया था। उन्होंने आगे कहा कि आरोपी व्यक्ति का पारसथुआ में एक घर है और वह सुनीता कुमारी को नहीं पहचानता है।

19.1. अपनी प्रतिपरीक्षा में उन्होंने कहा कि वह लगभग 6 वर्षों से अपनी दुकान चला रहे हैं और अपीलार्थी ने अपनी दुकान के 2 वर्षों के बाद अपनी दुकान शुरू की और अपीलार्थी के खिलाफ कोई आपराधिक मामला नहीं है और उसका आचरण ठीक है।

20. पीडब्लू नं. 9, रेशमी देवी पीड़िता का सह–ग्रामवासी हैं, जिसके साथ पीड़ित के रामगढ़ जाने की बात कही गई है। इस गवाह ने अपने साक्ष्य में कहा है कि दिनांक–01.05.2017 की सुबह पीड़िता अपने घर आई और कहा कि वह सुनीता कुमारी से बात करना चाहती है और अपना मोबाइल मांगा, फिर उसने अपना मोबाइल पीड़िता को दिया और पीड़िता ने सुनीता कुमारी से बात की और मोबाइल वापस कर दिया। एक घंटे बाद वह पीड़िता के साथ रामगढ़ बाजार गई, जहां उसके मोबाइल पर सुनीता कुमारी का फोन आया, जिसने उसे पीड़िता से बात करने के लिए कहा, फिर उसने अपना मोबाइल पीड़िता को सुनीता से बात करने के लिए दिया। पीड़िता ने बात की और कहा कि सुनीता उसे फोन कर रही थी और वह दुर्गा मंदिर जा रही थी। यह कहकर वह वहाँ से चली गई और यह गवाह डॉक्टर से दवा लेने गया। इस गवाह ने आगे कहा है कि उसने पुलिस को बयान दिया है और वह सुनीता को पहचानती है। इस गवाह ने आगे कहा है कि उसे बाद में पता चला कि परसथुआ निवासी सोनू गुप्ता नाम का एक लड़का पीड़ित के साथ भाग गया था। इस गवाह ने आगे कहा है कि उसका बयान पुलिस ने दर्ज किया था और उसने बताया था कि पीड़िता ने सुनीता कुमारी से उसका मोबाइल लेकर बात की थी। इस गवाह ने इस बात से इनकार किया है कि उसने झूठी गवाही दी है।

21. P.W.–10, विद्या कुमारी पुत्री– सुभाष यादव, उसने अपने साक्ष्य में कहा है कि घटना 04.05.2017 पर हुई थी। उस दिन उसकी साली रेशमी देवी और उसकी मां दवा खरीदने रामगढ़ बाजार जा रहे थे और जब वे रामगढ़ चौक पहुंचे तो पीड़िता और उसके ग्राम की सुनीता कुमारी आपस में बात कर रहे थे और मोबाइल पर बात भी कर रहे थे। एक लड़का चेहरे पर तौलिया बांधे मोटरसाइकिल के साथ खड़ा था, दुर्गा चौक से 10 फीट की दूरी पर खड़ा था और पीड़ित ने कहा, "हम जा रहे हैं, आप सभी अस्पताल जाएं", फिर ये लोग अस्पताल गए। इस गवाह ने आगे कहा है कि बाद में उसने सुना कि सोनू गुप्ता ने उसका अपहरण कर लिया था, जिसमें सुनीता कुमारी भी शामिल थी। इस गवाह ने सुनीता की पहचान की है, लेकिन सोनू गुप्ता की पहचान नहीं की है।

21.1. उन्होंने अपनी जिरह में कहा है कि वह कक्षा 8 में पढ़ती है और पीड़िता अपने स्कूल में कक्षा 7 में पढ़ती है, जो उसके बड़े चाचा की बेटी है। इस गवाह ने यह भी कहा है कि वह पीड़ित से 1:30 पीएम बजे 01.05.2017 को मिली थी। जब वह अपनी भाभी और माँ के साथ बाज़ार जा रही थी, तब पीड़िता अकेले रामगढ़ जा रही थी और उसने बताया कि उसके मामा का पुत्र लेने आया

है, वह अपने मामा के गाँव रामगढ़ जा रही है। इस गवाह ने यह भी कहा है कि दुर्गा चौक पर पीड़िता ने अपनी भाभी का मोबाइल लेकर बात नहीं की थी। जिस लड़के से उसने बात की थी, वह मोटरसाइकिल पर बैठा था और उसका चेहरा तौलिया से बंधा हुआ था। इस गवाह ने यह भी कहा है कि उसने पुलिस के सामने सोनू गुप्ता का नाम नहीं लिया था।

22. पीडब्लू–11, राजेश कुमार, जब्ती सूची के एक गवाह हैं, जिसने कहा है कि पुलिस उपनिरीक्षक ने रामगढ़ पुलिस थाने में उसके सामने नीले रंग के मोबाइल मॉडल–फैक्टर कंपनी के हीरो 2 सिम मोबाइल की जब्ती सूची तैयार की थी, जिसमें सिम और बैटरी गायब थी और 10: 30 बजे सुबह 09.05.2017 को ढक्कन तोड़ दिया गया था। इसी तरह, पीडब्लू नंबर 12, रंजीत कुमार यादव भी जब्ती सूची के गवाह हैं और उन्होंने जब्ती सूची में अपने हस्ताक्षर की पहचान की है, जिसे रामगढ़ पुलिस स्टेशन में इंस्पेक्टर विनोद कुमार द्वारा तैयार किया गया था, जिसे प्रदर्श–2/2 के रूप में चिह्नित किया गया है।

23. पीडब्लू–13, बुद्धिराम सिंह ने अपने साक्ष्य में कहा है कि उसे घटना के बारे में कोई जानकारी नहीं है, और न ही उसका बयान पुलिस द्वारा दर्ज किया गया था। इस प्रकार, इस गवाह को अभियोजन पक्ष द्वारा पक्षद्रोही घोषित किया गया है और अभियोजन पक्ष की ओर से प्रतिपरीक्षा में, इस गवाह ने इस बात से इनकार किया है कि उसने पुलिस को बताया था कि पीड़िता उसकी चचेरी बहन थी और उसने सुनीता कुमारी का मोबाइल मांगा था और किसी से बात कर रही थी। दिनांक–01.05.2017 को पीड़िता अपनी भाभी के साथ रामगढ़ बाजार गई और रेशमी के मोबाइल से बात की, जिसका नंबर 8757079816 पर 7979785053 था और जब रामराज सिंह ने सुनीता को उसके मोबाइल से बात करने के लिए डांटा, तो वह गुस्से में आ गई और सिम और बैटरी हटा दी, उसे तोड़ दिया और फेंक दिया। इस गवाह ने सुनीता कुमारी की पहचान की है, लेकिन सोनू कुमार की पहचान नहीं की है।

24. पीडब्लू–14 ने भी इस घटना का समर्थन नहीं किया है और पक्षद्रोही घोषित किया गया है। अपनी जिरह में, उसने इस बात से इनकार किया है कि उसने पुलिस को बताया था कि ममता कुमारी और पीडिता दोनों बहनें हैं और पूजा कुमारी के पास एक मोबाइल फोन था और पीड़िता 01.05.2017 को गाँव की रेश्मी भाभी के साथ रामगढ़ बाजार गई और रेश्मी के मोबाइल दो मोबाइल नंबरों पर बात की। वह उस लड़के के साथ मोटरसाइकिल पर गई, जो गेट के पास खड़ा था और उसका चेहरा तौलिया से बंधा हुआ था। रेश्मी की ननद ने कहा कि वह उसके मामा का पुत्र है और उसे उसकी दादी के घर ले जाएगा, लेकिन जब पीड़िता अपने मामा के घर नहीं पहुंची तो उसकी तलाश शुरू हो गई

और रामराज सिंह ने सुनीता कुमारी से पूछताछ की और उसे पीड़िता से मोबाइल पर बात कराने के लिए डांटा, जिसके कारण सुनीता गुस्से में आ गई और उसका मोबाइल तोड़ दिया और फेंक दिया और सुनीता कुमारी पर अपहरण में मदद करने का आरोप लगाया गया है क्योंकि उसने पीड़िता से मोबाइल पर बात कराई थी।

25. पीडब्लू–15, विश्वामित्र उर्फ कानू यादव ने अपने साक्ष्य में कहा कि उनके पास न तो कोई जानकारी है और न ही घटना के बारे में कुछ सुना है और उनका बयान पुलिस द्वारा दर्ज नहीं किया गया था।

25.1. अभियोजन पक्ष की ओर से जिरह में इस बात से इनकार किया गया है कि पीड़िता अपनी चचेरी बहन सुनीता कुमारी के मोबाइल का प्रयोग की और रेश्मी भाभी के साथ रामगढ़ बाजार गई और वहां से रेश्मी के मोबाइल से दो मोबाइल नंबरों पर बात की और जिस व्यक्ति से वह बात कर रही थी वह ब्लॉक के गेट के पास मोटरसाइकिल के पास खड़ा था और उसका चेहरा तौलिया से ढका था और पीड़िता ने रेश्मी को बताया कि वह अपने मामा के पुत्र के साथ जा रही थी और उसके साथ चली गई।

26. पीडब्लू–16 विनोद कुमार सिंह, इस मामले के जांच अधिकारी, जिन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि 01.05.2017 को, उन्हें रामगढ़ पुलिस स्टेशन में तैनात किया गया था और उस दिन, उन्होंने एस. एच. ओ. के आदेश पर केस नं. 104/2017 का चार्ज लिया। इसके बाद, केस डायरी में प्रेजेंटेशन सह जब्ती दर्ज करने के बाद, सूचक का बयान दर्ज किया और घटना स्थल पर आगे बढ़े। इस घटना की जगह रामगढ़ पुलिस स्टेशन के तहत दुर्गा चौक पार्क से 200 मीटर उत्तर में है, जो दक्षिण–उत्तर कोने में स्थित है, जो पूर्वी कार्यालय के मुख्य द्वार से सटा हुआ है, जहां आरोपी मोटरसाइकिल के साथ खड़ा था और अपना चेहरा तौलिया से ढक रखा था। घटना स्थल की चौहद्दी, पूर्व में ब्लॉक कार्यालय और समेकन कार्यालय है, पश्चिम में ब्लॉक कार्यालय का द्वार है और उत्तर में अजय चौरसिया का पान का दुकान, दुर्गा मंदिर और धर्मशाला और दक्षिण में पक्की सड़क है। बाद में, वह घटना स्थल से ग्राम इसरी गया और घटना का समर्थन करने वाले गवाहों रेशमी, विश्वामित्र यादव और संजय यादव के बयान दर्ज किए। इस गवाह ने आगे कहा है कि 09.05.2017 को, पीड़िता अपने माता–पिता के साथ पुलिस स्टेशन आई और उस दिन उसने पीड़िता का बयान दर्ज किया, लेकिन अदालत बंद होने के कारण, धारा 164 Cr.P.C के तहत उसका बयान दर्ज नहीं किया जा सका। बाद में, 11.05.2017 को, पीड़िता का बयान धारा 164 Cr.P.C के तहत अदालत में दर्ज किया गया था और उसकी मेडिकल जांच मोहनिया अस्पताल में की गई थी और पीड़िता का बयान डी. एस. पी. द्वारा दर्ज किया गया था। पीड़िता के बयान के आलोक में, वह गाँव परस्तुआ पहुँचा, वहाँ सोनू को गिरफ्तार कर

लिया और गाँव के निवासियों संतोष कुमार गुप्ता, श्याम बिहारी साह, मंता साह, गुपुत शर्मा और अशोक साह के बयान दर्ज किए गए। उन्होंने उस जगह का निरीक्षण किया जहां पीड़ित को रखा गया था, जो तीन कमरों का सीढ़ीदार घर है, जिसमें एक लोहे का दरवाजा है और निकास पश्चिम की ओर है। घर के बीच में एक हैंडपंप और एक सीढ़ी है और यह अपीलार्थी सोनू गुप्ता का घर है। इसके बाद, उन्होंने धारा 164 के तहत पीड़ित का बयान और चिकित्सा जांच रिपोर्ट प्राप्त की और डॉक्टर द्वारा दी गई स्लाइड प्राप्त करने के बाद, उन्होंने इसे 25.07.2017 पर जांच के लिए फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में भेज दिया। इस गवाह ने यह भी कहा है कि उसने मोबाइल कंपनी से अपीलार्थी और सुनीता कुमारी के कॉल विवरण प्राप्त किए, जिससे पता चला कि अपीलार्थी के मोबाइल नंबर 7979785053 और 8757079816 थे और सुनीता कुमारी के मोबाइल का आई. एम. ई. आई. नंबर 911487600160474 और 9114876003854779 था और कॉल सुनीता कुमारी के मोबाइल नंबर 7319775465 एवं 9065027741 से सोनू कुमार गुप्ता (अपीलार्थी) के मोबाइल नंबर 8757079816 पर दिनांक–26.04.2017, 09.05.2017 और 01.05.2017 को कॉल की गई थी। रेशमी कुमारी के मोबाइल नंबर के कॉल विवरण से पता चला कि बातचीत सोनू कुमार गुप्ता (अपीलकर्ता) के मोबाइल नंबर 8573305749 से 02.05.2017,03.05.2017 और 08.05.2017 को हुई थी। इसके बाद, जाँच के दौरान पाए गए तथ्यों के आलोक में, इस गवाह ने अपीलार्थी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 366ए, 376 और पॉक्सो अधिनियम की धारा 4 के तहत आरोप पत्र संख्या 125/2017 दिनांक 11.07.2017 और दूसरा आरोप पत्र संख्या 149/2017 दिनांक 31.07.2017 के तहत पहला आरोप पत्र प्रस्तुत किया। इस गवाह ने प्रस्तुति–सह–जब्ती सूची की पहचान की है, जिसे प्रदर्श–8 के रूप में चिह्नित किया गया है और मोबाइल के सी. डी. आर. दिनांक 25.04.2017 से 11.05.2017 की पहचान की है, जो डायरी के पृष्ठ संख्या 23 से 45 में संलग्न है, जिसे आपत्ति के साथ प्रदर्श–9 के रूप में चिह्नित किया गया था।

26.1. अपनी जिरह में, इस गवाह ने कहा है कि चौरसिया पान की दुकान घटना स्थल के बगल में है, लेकिन उसका बयान दर्ज नहीं किया गया था और वह जगह रात 10 बजे तक व्यस्त रहती है। इस गवाह ने आगे कहा है कि प्रस्तुति–सह–जब्ती सूची में यह नहीं लिखा है कि टूटा हुआ मोबाइल किसने बनाया और इसे गलती से छोड़ दिया गया है। गवाह ने यह भी कहा है कि कॉल का विवरण जब्ती सूची तैयार होने के बाद प्राप्त किया गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि उन्हें एसपी कार्यालय के क्लर्क से सीडीआर प्राप्त हुआ था लेकिन यह डायरी में नहीं लिखा गया है। इस गवाह ने यह भी कहा है कि गवाह विद्या कुमारी ने अपने बयान में कहा था कि 01.05.2017 को वह दिन में 2 बजे अपनी मां और भाभी के

साथ रामगढ़ बाजार जा रही थी। गाँव निकलते समय, पीड़िता ने बताया कि उसके मामा का पुत्र उग्राम लेने रामगढ़ आया था और वह दुर्गा चौक गई और रेशमी भाभी के मोबाइल पर नंबर पर कॉल किया और बात की और देखा कि मोटरसाइकिल पर सवार लड़का अपना चेहरा तौलिया से ढक कर ब्लॉक ऑफिस के गेट पर खड़ा था और पीड़ित यह कहते हुए चली गई कि "तुम रेशमी भाभी के साथ जाओ, मैं अपने चचेरे भाई के साथ अपनी दादी के घर जा रही हूँ।"इस गवाह ने यह भी कहा है कि सूचक रामराज सिंह ने कहा था कि घटना से पहले वह अपनी सास के अंतिम संस्कार के लिए अपनी पत्नी के साथ अपने ससुराल गया था, जहां उसे जानकारी मिली कि उसकी बेटी घर पर नहीं है, फिर वह घर आया और तलाशी ली। लेकिन इस गवाह ने अपने बयान में यह नहीं कहा कि लड़की के साथ बलात्कार किया गया था, बल्कि कहा कि उसका अपहरण कर लिया गया था। इस गवाह ने कहा है कि पीड़िता ने अपने बयान में कहा था कि 01.05.2017 को, सुनीता ने रेशमी देवी को मोबाइल पर जल्दी रामगढ़ जाने को कहा था, जिस पर उसने कहा कि वह पाँच मिनट में दुर्गा चौक पहुंच जाएगी और वह रामगढ़ के रास्ते में है। रश्मि देवी के मोबाइल पर फिर से कॉल आया, जो सुनीता के मोबाइल से आया, जिसमें लड़के की आवाज़ आ रही थी, उसने पूछा "तुम कहाँ हो? ", फिर उसने कहा कि यह एक गलत नंबर है, फिर उसने कहा, "यह आपका भाई राम लखन है, आपकी दादी मर गई हैं और आपकी माँ वहाँ गई हैं और आपको वहाँ बुलाया है।"सुनीता भी वहाँ खड़ी थी, जहाँ उसने बोतल से पानी दिया, पीने के बाद उसे कुछ समझ नहीं आया। सुनीता देवी ने कहा "आपको अपने चचेरे भाई की बाइक पर जाना चाहिए" और वह नशे की हालत में थी और सुनीता ने अपहरण और बलात्कार की घटना में मदद की थी। सुनीता ने भी उसे बाइक पर बिठाया और खुद उस पर बैठ गई। इस गवाह ने आगे कहा है कि इस गवाह ने यह नहीं कहा कि सोनू गुप्ता (अपीलकर्ता) ने उसके साथ 01.05.2017 से 08.05.2017 तक शारीरिक संबंध बनाए थे और उसे पीटते थे और जब सोनू के माता–पिता ने सोनू को धमकी दी तो उसे रामगढ़ बाजार में ले आए और छोड़ दिया। इस गवाह ने यह भी कहा है कि उसने अपनी पत्नी के विरोध के बारे में बात की थी, लेकिन उसने यह नहीं कहा था कि सोनू गुप्ता ने उसे खाने के लिए गोली दी थी, जिससे वह नशे में थी और उसने यह भी नहीं कहा था कि सोनू गुप्ता ने उसे घर के अंदर बंद कर दिया था और वह डर से चिल्लाती रही। इस गवाह ने इनकार किया कि उनकी जांच गलत है।

27. पीडब्लू नंबर 17 एक औपचारिक गवाह है, जिसने रामगढ़ पुलिस स्टेशन केस नंबर 104/2017 दिनांक 07.05.2017 की औपचारिक प्राथमिकी और लिखित आवेदन पर पृष्ठांकन की पहचान की है, जिसे प्रदर्श–11 और 12 के रूप में चिह्नित किया गया है।

28. रक्षा पक्ष की ओर से दो गवाहों को पेश किया गया है।

29. डी. डब्ल्यू. 1 लालजी हिंद है, जो मौज़ा–बिनपुरवा पुलिस स्टेशन–रामगढ़ जिले–कैमूर का निवासी है, जिसने अपने साक्ष्य में कहा है कि वह अपीलार्थी को जानता है। इसके साथ ही वह सूचक रामराज सिंह को भी जानता है। उन्होंने आगे कहा है कि रामराज सिंह के दामाद शिव कुमार सिंह की पराशथुआ में चश्मे की दुकान है और अपीलार्थी की पराशथुआ में डाक बंगले के पास कपड़े की दुकान है। अपीलार्थी पराशथुआ में अपने परिवार के साथ रहता है और उसने सुना था कि शिव कुमार का परिवार पराशथुआ में उसके घर जाता था। इस गवाह ने आगे कहा है कि शिव कुमार सिंह ने दो साल पहले अपीलार्थी की दुकान से कपड़े लिए थे और अपीलार्थी और शिवकुमार सिंह के बीच पैसे को लेकर विवाद था। अपीलार्थी का पैतृक घर बढ़ुपर में है और पराशथुआ में उनका अपना घर भी है।

29.1. जिरह में, इस गवाह ने कहा है कि वह पराशथुआ में व्यापार करता है और आगे कहा कि उसे अपीलार्थी की दुकान पर जाने की तारीख और महीना याद नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने शिव कुमार की दुकान से चश्मा नहीं खरीदा है और न ही उनके पास कोई दस्तावेज है। अपीलार्थी ने बकाया राशि के लिए कोई दस्तावेज नहीं दिखाया था। उनका घर बिंदपुरवा, पुलिस स्टेशन–रामगढ़ में है।

30. डी. डब्ल्यू. 2 बैजू बिंद ग्राम बिंदपुरवा, थाना– रामगढ़ जिला–कैमूर के निवासी हैं। उसने कहा है कि वह मुखबिर रामराज सिंह और अपीलार्थी को जानता है। वह शिव कुमार को भी जानते हैं, जो रामराज के दामाद हैं। इस गवाह ने आगे कहा है कि शिव कुमार की पराशथुआ में चश्मे की दुकान है और अपीलार्थी की पराशथुआ में कपड़ों की दुकान है। शिव कुमार अपने परिवार के साथ पराशथुआ में किराए के मकान में रहते हैं, जहाँ उनके ससुराल वाले और पीड़ित आते हैं। अपीलार्थी सोनु कुमार का पराशथुआ में भी एक घर है और दोनों दुकानें पास में ही हैं। इस गवाह ने आगे कहा है कि डेढ़ साल पहले कपड़ों को उधार लेने के संबंध में किसी मुद्दे को लेकर अपीलार्थी और शिव कुमार के बीच लड़ाई हुई थी।

30.1. अपनी जिरह में, इस गवाह ने कहा है कि उसका गाँव पराशथुआ से ढाई किलोमीटर दूर है और पीड़ित का गाँव इसरी से उसका गांव 10 किलोमीटर की दूरी पर है। इस गवाह ने आगे कहा है कि उसे विवाद की तारीख याद नहीं है और न ही उसने बकाया राशि की कोई रसीद देखी है। उनका घर भी बिंदपुरवा, पुलिस स्टेशन–रामगढ़ में है।

31. हमने प्रस्तुतियों पर विचार किया जो पक्षकारों की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। हमने अभिलेख पर रखी गई सामग्री का भी अध्ययन किया है, जिसमें बयान भी शामिल हैं। अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्यों से यह पता चलता है कि अभियोजन पक्ष ने सत्रह गवाहों से पूछताछ की थी और यह विवाद में नहीं है कि पीड़िता को दिनांक–01.05.2017 से

08.05.2017 के बीच कहीं भी नहीं पाया गया था और बाद में पता चला कि सूचना देने वाला गुमशुदगी की शिकायत दर्ज करने जा रहा था और उसके बाद वह उसे पुलिस स्टेशन ले गया जहां पीड़िता ने पुलिस अधिकारियों के सामने अपना बयान दिया कि आरोपी ने उसका अपहरण किया और यौन उत्पीड़न किया और सात दिनों तक उसके साथ बलात्कार किया और उसके बाद उसे वापस रामगढ़ ले आया और उसे छोड़ दिया।

32. इस स्तर पर, हम पीडब्लू–03 डॉ. बदरूद्दीन अंसारी द्वारा डॉ. के. एम. सिंह, डॉ. मनीष कुमार, डॉ. श्रीमती अंबर सहित डॉक्टरों के बोर्ड के साथ दी गई गवाही का उल्लेख करना चाहेंगे जिन्होंने पीड़ित लड़की की जांच की और मुख्य परीक्षा में अपने बयान में कहाः .

1) दाहिने हाथ की पामर सतह की चिकित्सा सीमा के साथ दो चोटें।

i) आयाम 2.5cm x 5 सेमी पीला रंग।

(ii) 1.25 सेमी x.75 से. मी. पीला रंग।

2) दाहिने हाथ की पामर सतह के हिपॉथिनर क्षेत्र पर .75 सेमी व्यास का घाव।

3) आस–पास के क्षेत्र में सूजन और कोमलता के साथ नरम लाल पपड़ी का गठन। दाहिनी बीच की उंगली पर टर्मिनल की पामर सतह पर घाव। .75 सेमी व्यास नरम लाल पपड़ी, सूजन और कोमलता के साथ।

4) बाएं कान के पीछे एक चोट 2.5 सेमी x 2.5 सेमी।

33. चोट की उम्र एक या दो सप्ताह पुरानी बताई गई है। चिकित्सकीय जाँच 03.01.2018 को की जाती है।

34. आंतरिक जांच के अनुसार जो डॉ. श्रीमती अंबर द्वारा उर्मिला कुमारी ए. एन. एम. सहायक के साथ किया गया था। दानेदार ऊतक टकराव ऊतक और बीड पुस से ढकी पीछे की सतह पर मध्य–रेखा टियर पर चोट है। हाइमेन भी मौजूद नहीं है। सूक्ष्म परीक्षण के अनुसार, शुक्राणु नहीं मिला था।

35. डॉ. के. एम. सिंह द्वारा दी गई दंत चिकित्सा रिपोर्ट के अनुसार सुझाए गए दंत आयु 12–14 वर्ष है। शारीरिक विशेषता, मासिक धर्म के इतिहास, माध्यमिक यौन चरित्रों के विकास, दंत चिकित्सा और रेडियो–तार्किक परीक्षा के आधार पर, पीड़ित की आयु 12–14 वर्ष है। योनि में बलपूर्वक प्रवेश के प्रमाण हैं। शिश्न के प्रवेश से इंकार नहीं किया जा सकता है। संघर्ष का संकेत मौजूद है।

35.1. अपनी प्रतिपरीक्षा में उन्होंने विशेष रूप से कहा है कि चोट लगभग एक से दो सप्ताह पुरानी है और उत्तरजीवी को लगी चोट के आधार पर संघर्ष का संकेत था। उन्होंने आगे कहा कि इन चोटों का निर्माण नहीं किया जा सका और चोट कठोर और कुंद पदार्थ के कारण होती है।

36. मेडिकल बोर्ड द्वारा दी गई रिपोर्ट और डेंटल रिपोर्ट और रेडियो–लॉजिकल जाँच के अनुसार, उनकी मुख्य परीक्षा में दिए गए बयान से यह प्रथम दृष्टया साफ और स्पष्ट है कि पीड़िता लगभग 12–14 वर्ष की आयु का नाबालिग है। संहिता की धारा 164 के तहत पीड़िता ने अपने बयान में कहा है कि उसकी उम्र 12 साल है, जिसे मजिस्ट्रेट ने दर्ज किया है। जे. जे. अधिनियम, 2007 के नियम 12 के तहत, प्रासंगिक दस्तावेजों के अभाव में, विधिवत गठित चिकित्सा बोर्ड से चिकित्सा राय लेनी थी जो किशोर या बच्चे की उम्र घोषित करेगा।

37. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अभियोजन पक्ष पीड़ित की उम्र के संबंध में कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रदान करने में विफल रहा है। निर्णयों के एक समूह में यह स्पष्ट रूप से निर्णय लिया गया है कि यदि पीड़ित की आयु निर्धारित करने के लिए कोई दस्तावेजी साक्ष्य उपलब्ध नहीं है, तो चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट को ध्यान में रखा जाना चाहिए, इसलिए चिकित्सा राय को महत्व दिया जाता है। **ओम प्रकाश बनाम राजस्थान राज्य, (2012) 5 एस. सी. सी. 201 में प्रतिवेदित, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नलिखित रूप में अभिनिर्धारित किया है –**

> *"चिकित्सा साक्ष्य की प्रासंगिकता और मूल्य पर विचार करते हुए, उम्र का डॉक्टर का अनुमान हालांकि सबूत का एक मजबूत पदार्थ नहीं है क्योंकि यह केवल एक राय है, वैज्ञानिक चिकित्सा परीक्षणों जैसे ऑसिफिकेशन और रेडियो–लॉजिकल परीक्षा पर आधारित ऐसी राय को कथित किशोर आरोपी की उम्र का निर्धारण करते समय पुष्टिकारक मूल्य वाले मजबूत सबूत के रूप में माना जाएगा।*

38. रामदेव चौहान बनाम असम राज्य (2001) 5 एससीसी 714 के मामले में एक अन्य फैसले में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने निम्नानुसार अभिनिर्धारित किया है –

> *"बेशक, उम्र का डॉक्टरों का अनुमान सबूत के लिए एक मजबूत विकल्प नहीं है क्योंकि यह केवल उनकी राय है।*

लेकिन एक विशेषज्ञ को उस क्षेत्र में दरकिनार नहीं किया जा सकता है जहां अदालत यह पता लगाने के लिए अंधेरे में टकटकी लगाती है कि उसे संवैधानिक संरक्षण देने के उद्देश्य से एक नागरिक की उम्र क्या होगी। अन्य सभी स्वीकार्य सामग्रियों के अभाव में, यदि ऐसी राय उसकी उम्र की सीमा के संबंध में एक उचित संभावना की ओर इशारा करती है तो निश्चित रूप से इस पर विचार किया जाना चाहिए।

39. उपरोक्त निर्णयों को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट है कि जब किसी व्यक्ति की उम्र को प्रतिस्थापित करने के लिए कोई दस्तावेजी साक्ष्य उपलब्ध नहीं है कि क्या वह नाबालिग है या बड़ा है, तो चिकित्सा परीक्षा बोर्ड की रिपोर्ट वैध सबूत है।

40. पीड़िता ने आगे कहा है कि पीड़िता के बहनोई की दुकान अपीलार्थी की दुकान के पड़ोसी है या नहीं पता नहीं। आगे उसे अपने परिवार और अपीलार्थी के बीच दुश्मनी और उधार के बारे में भी कोई जानकारी नहीं है। हालाँकि, पी. डब्ल्यू. 8 को पक्षद्रोही घोषित किया गया है। अभियोजन पक्ष के अनुरोध पर प्रतिकूल, लेकिन उसकी प्रतिपरीक्षा पी. डब्ल्यू. 8 में यह भी नहीं कहा गया है कि पीड़िता के बहनोई की दुकान अपीलार्थी की दुकान के पास या नजदीक में है।

41. इस वर्तमान मामले में पीड़िता की आयु 12–14 वर्ष बताई गई है। दो साल की त्रुटियां के अंतर को ध्यान में रखते हुए, पीड़ित की उम्र अभी भी 16 साल है जो वयस्क होने की उम्र से दो साल कम है। सहमति की आयु 18 वर्ष है। पीड़ित की आयु लगभग 14 से 16 वर्ष है, जो सहमति की आयु से कम है।

42. अपीलार्थी के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि पीड़ित ने अपीलार्थी के साथ यौन संबंध/संबंध के लिए सहमति दी है। अपीलार्थी के लिए विद्वान वकील के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में, यह स्पष्ट है कि नाबालिग और नाबालिग होने के नाते पीड़ित की यौन संबंध/संभोग के लिए कोई सहमति नहीं है और इसे हर स्थिति में यौन हमला माना जाएगा। इस तथ्य और अभियोजन पक्ष के गवाहों और बचाव पक्ष के गवाहों के बयान पर विचार करते हुए, इन सब में ऐसा कोई सबूत या तथ्य नहीं है, कि पीड़िता का आरोपी के साथ पहले संबंध था और उन्होंने इसके बारे में कुछ भी सुझाव नहीं दिया है।

43. कोई तर्कसंगत निष्कर्ष नहीं हो सकता है कि पीड़िता ने संभोग के लिए सहमति दे दी है और इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अपीलार्थी ने पीड़िता के साथ बलात्कार किया था। पीड़िता के शरीर के अंगों पर लगी चोटें कठोर कुंद वस्तु के कारण हुई थीं, डॉक्टरों के बोर्ड द्वारा जांच की गई थी, जो जीवित पीड़िता को हुए संघर्ष के संकेत को दर्शाती है। पीड़िता की आंतरिक रूप से भी जांच की गई और हाइमेन मौजूद नहीं था और योनि में जोरदार प्रवेश के प्रमाण मिले। मेडिकल बोर्ड ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि पीड़िता को लगी चोटों को निर्मित या स्व–प्रतिरूपित नहीं किया जा सकता है।

44. इस बात पर आते हुए कि आरोपी अपराध का दोषी है या नहीं, यह इस बिंदु पर आता है कि अभियुक्त को यह साबित करना होता है कि उसने अपराध किया है या नहीं। अभियुक्त तब तक निर्दोष नहीं होता जब तक कि वह दोषी साबित नहीं हो जाता, लेकिन उसे यह साबित करना होता है कि वह दोषी नहीं है। पॉक्सो अधिनियम की धारा 29 में कहा गया है कि जब किसी व्यक्ति पर पॉक्सो अधिनियम के तहत कोई अपराध करने या उकसाने या करने का प्रयास करने के लिए मुकदमा चलाया जाता है, तो विशेष अदालत यह मान लेगी कि ऐसे व्यक्ति ने अपराध किया है या उकसाया है या करने का प्रयास किया है, जब तक कि इसके विपरीत साबित नहीं हो जाता है, एक आरोपी को इसके विपरीत साबित करना होगा, यानी उसे यह साबित करना होगा कि उसने अपराध नहीं किया है और वह निर्दोष है। यह एक तुच्छ कानून है कि एक विपरीत तथ्य को साबित करने के लिए नकारात्मक साबित नहीं किया जा सकता है, इस तथ्य को पहले प्रस्तावित किया जाना चाहिए जिसके विपरीत स्थापित करने की कोशिश की जाती है। इसलिए, एक आवश्यक पूर्व शर्त है कि अभियोजन मामले के मूलभूत तथ्यों को प्रमुख साक्ष्य द्वारा स्थापित किया जाना चाहिए, इससे पहले कि उपरोक्त वैधानिक अनुमान को आरोपित पर इसके विपरीत साबित करने की जिम्मेदारी सौंपी जाए। यह अनुमान किसी विशेष मामले की विशेष विशेषताओं के आलोक में अभिलेख पर साक्ष्य का विश्लेषण करने के लिए न्यायालय के आवश्यक कर्तव्य को नहीं छीनता है, उदाहरण के लिए, अभियोजन पक्ष के संस्करण में पेटेंट विसंगतियां या अंतर्निहित दुर्बलताएं या अभियुक्त और पीड़ित के बीच गहरी शत्रुता का अस्तित्व अभियोजन पक्ष के मामले में झूठ के एक अप्रतिरोध्य निष्कर्ष को जन्म देता है, यह निर्धारित करते हुए कि क्या अभियुक्त ने अपनी जिम्मेदारी निभाई है और किसी मामले के दिए गए तथ्यों में अपनी बेगुनाही स्थापित की है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 114 बी अपराध के बारे में अनुमानों से संबंधित है और निम्नानुसार पढ़ती है –

> *" 114 बी. भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 354, धारा 354 ए, धारा 354 बी, धारा 354 सी, धारा 354 डी, धारा*

> *509, धारा 509 ए या धारा 509 बी के तहत किए गए अपराधों के बारे में अनुमान।– जब सवाल यह है कि क्या किसी व्यक्ति ने भारतीय दंड संहिता की धारा 354, धारा 354 ए, धारा 354 बी, धारा 354 सी, धारा 354 डी, धारा 509, धारा 509 ए, या धारा 509 बी के तहत अपराध किया है।* ***यदि पीड़ित अदालत के समक्ष यह बयान देती है कि उसे यौन उत्पीड़न का शिकार बनाया गया है या उसकी शील भंग की गई थी या उसके कपड़े उतार दिए गए थे या उसका पीछा किया गया था या उसकी निजता में घुसपैठ की गई थी या उसे किसी भी तरह से यौन उत्पीड़न किया गया था, जैसा भी मामला हो, तो अदालत, जब तक इसके विपरीत साबित नहीं हो जाता, यह मान सकती है कि ऐसा अपराध उस व्यक्ति द्वारा किया गया है।***

45. रागुल बनाम राज्य (आपराधिक अपील संख्या.391 का 2016) में मद्रास उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश के पास दोषी ठहराए जाने को चुनौती देने वाले अभियुक्त के कहने पर पॉक्सो अधिनियम के तहत अनुमानों के दायरे पर विचार करने का अवसर था। यह अभिनिर्धारित किया गया कि पॉक्सो अधिनियम की धारा 29 का कड़ाई से अर्थ लगाया जाना चाहिए क्योंकि इसमें दंडात्मक परिणाम शामिल हैं। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि, उक्त धारा यह नहीं कहती है कि यह अप्रतिरोध्य धारणा थी और इस संदर्भ में, यह सुरक्षित रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रावधान के तहत तैयार की जाने वाली धारणा एक खंडन योग्य धारणा है। अदालत इस बात पर विचार करने के लिए आगे बढ़ी कि क्या अभियोजन पक्ष ने पॉक्सो अधिनियम की धारा 29 के तहत अनुमान लगाने के लिए मूलभूत तथ्यों को सामने रखा है और स्थापित किया है।

46. बचाव पक्ष के गवाह सं.1 और 2 से पूछताछ करने के बाद उन्होंने कहा है कि अपीलार्थी और पीड़िता के बहनोई की दुकान से कपड़े लेने और उसके लिए भुगतान नहीं करने के लिए कुछ पैसे के बारे में पूर्व शत्रुता थी और जिसके कारण आरोपी और पीड़िता के बहनोई दोनों के बीच एक–दूसरे के साथ जुबानी लड़ाई हुई थी, जिसकी सही तारीख दोनों बचाव पक्ष के गवाहों को पता नहीं है। डी. डब्ल्यू. 1 लालजी बिंद ने अपने बयान में कहा है कि उन्होंने सुना है कि पीड़ित के बहनोई की पराशथुआ में कपड़ों की दुकान है। दोनों गवाहों द्वारा दिए गए बयानों पर विचार करते हुए, बचाव पक्ष के गवाहों ने कहा है कि अपीलकर्ता गलत तरीके से सन्निहत कर रहा है कि पिछली दुश्मनी के कारण और

पीड़ित लड़की ने इस वर्तमान मामले में अपीलकर्ता का नाम लिया है। अपनी प्रतिपरीक्षा में पीड़िता ने स्पष्ट रूप से कहा था कि उसे पीड़िता के बहनोई की चश्मे की दुकान की जानकारी है, लेकिन उसने यह भी उल्लेख किया है कि उसे पीड़िता के बहनोई की दुकान से सटे अपीलार्थी की दुकान या घर के बारे में कोई जानकारी नहीं है। उसने यह भी उल्लेख किया है कि वह अपीलार्थी से परिचित नहीं है। पीड़ित ने यह भी कहा है कि वह जानती है कि उसके मामा के दो बेटे हैं, मुकेश और रामलखन, लेकिन वह उन्हें नहीं जानती है और वह कभी भी अपने मामा के घर नहीं गई है।

47. अभियोजन पक्ष ने स्पष्ट रूप से अभियुक्त व्यक्ति के विरुद्ध मामला साबित की है और इस प्रकार, अपीलार्थी पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि उसने ऐसा अपराध किया है या नहीं। उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों पर हमारी राय के आधार पर, हमारा विचार है कि अपीलार्थी यह साबित करने में सक्षम नहीं है कि वह अपराध करने का दोषी नहीं है।

48. अपीलार्थी के विद्वान वकील ने भी याचिका दायर की गई कि पीड़ित के परिवार ने 8 दिनों तक पुलिस या किसी भी प्राधिकरण के खिलाफ कोई शिकायत दर्ज नहीं की, जब पीड़िता लापता थी, तो उन्होंने केवल अंतिम अवसर पर लड़की को खोजने के बाद मामला दर्ज किया। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति, जिसका 12 साल का नाबालिग बच्चा एक दिन के लिए भी लापता हो जाता है, बच्चे को खोजने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। एकमात्र व्यक्ति जिसने कहा है कि अपराध किया गया है, वह केवल पीड़ित लड़की है और इसकी पुष्टि करना गलत है। इस तर्क पर आते हुए, हमारा विचार है कि यदि अभियोजक का साक्ष्य विश्वास को प्रेरित करता है, तो भौतिक विवरणों में उसके बयान की पुष्टि किए बिना उस पर भरोसा किया जाना चाहिए। एक बलात्कारी न केवल पीड़ित की गोपनीयता और व्यक्तिगत अखंडता का उल्लंघन करता है, बल्कि अनिवार्य रूप से इस प्रक्रिया में गंभीर मनोवैज्ञानिक के साथ–साथ शारीरिक नुकसान का कारण बनता है। बलात्कार केवल एक शारीरिक हमला नहीं है, बल्कि यह अक्सर पीड़ित के पूरे व्यक्तित्व के लिए विनाशकारी होता है। एक बलात्कारी असहाय महिला की आत्मा को नीचा दिखाता है, अदालतों पर इसलिए, बलात्कार के आरोपी पर मुकदमा चलाते समय एक बड़ी जिम्मेदारी होनी चाहिए। न्यायालय को किसी मामले की व्यापक संभावनाओं की भी जांच करनी चाहिए और अभियोजक के बयान में मामूली विरोधाभासों और महत्वहीन विसंगतियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए, जो अन्यथा विश्वसनीय अभियोजन मामले में घातक नहीं हैं। बलात्कार की शिकार, उसके द्वारा दिए गए बयान और अपराध की गवाही की सराहना अन्य गवाहों की गवाही जैसी संभावनाओं के आधार पर की जानी चाहिए और दोषसिद्धि पूरी तरह से ऐसी गवाही पर आधारित हो सकती है।

49. हमारे भारतीय समाज में, एक लड़की और महिला की गरिमा का सर्वोच्च महत्व है। यहाँ तक कि एक महिला/लड़की को भी देवी माना जाता है। इस तथ्य और एक लड़की की गरिमा की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, जो पूरी तरह से एक परिवार की गरिमा रखती है, अपने परिवार की शत्रुता को संतुष्ट करने के लिए किसी व्यक्ति के खिलाफ झूठा बलात्कार का मामला दर्ज नहीं करेगी। अभियोजक के पिता भी आम तौर पर अपनी बेटी के साथ बलात्कार की झूठी कहानी को स्वीकार नहीं करते थे और इस तरह एक सार्वजनिक शर्म और शर्मिंदगी लाते थे। वर्तमान मामले में, पिता काफी समय से दुर्ग में रह रहे थे और उनका बयान केवल सुनी–सुनाई बातें हैं। फिर भी उनके द्वारा दिया गया बयान पीड़िता द्वारा संहिता की धारा 164 के तहत दिए गए बयान की पुष्टि करता है।

50. आई. पी. सी. की धारा 375 के तहत बलात्कार को परिभाषित किया गया है। धारा–375 के तहत, एक पुरुष को बलात्कार करने के लिए कहा जाता है यदि वह अपने लिंग को किसी भी मात्रा में महिला की योनि, मुंह, मूत्रमार्ग या गुदा में प्रवेश करता है, या उसे अपने या किसी और के साथ ऐसा करने के लिए मजबूर करता है; या लिंग के अलावा शरीर की किसी भी वस्तु या हिस्से को योनि, मूत्रमार्ग, गुदा या उसके शरीर के किसी अन्य हिस्से में डालता है, या उसे अपने या किसी अन्य व्यक्ति के साथ ऐसा करने के लिए मजबूर करता है। एक महिला के शरीर के किसी भी हिस्से को योनि, मूत्रमार्ग, गुदा, या उसके शरीर के किसी अन्य हिस्से में प्रवेश प्रस्तुत के लिए हेरफेर करता है, या उसे अपने या किसी और के साथ ऐसा प्रस्तुत के लिए मजबूर करता है; या किसी महिला की योनि, गुदा, या मूत्रमार्ग पर अपनी जीभ लगाना, या उसे अपने या किसी अन्य व्यक्ति के साथ ऐसा प्रस्तुत के लिए मजबूर करना, या भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 375 के तहत निर्धारित सात खंडों में से कोई भी। यह प्रावधान सात खंडों के साथ अपनाया गया है जो प्रमुख रूप से ऐसी परिस्थितियों को निर्धारित करता है कि यदि ऐसा होता है, तो इसे बलात्कार के अपराध के बराबर माना जा सकता है। **छठा और सातवां खंड** नाबालिग के साथ यौन संबंध और जब महिला सहमति व्यक्त करने में असमर्थ हो।

51. छठे खंड के अनुसार, यदि आपत्तिजनक कार्य लड़की की सहमति के साथ या उसके बिना किया जाता है और लड़की की उम्र अठारह वर्ष से कम है, इसे बलात्कार कहा जाता है। **सातवाँ खंड** इसमें कहा गया है कि यदि किसी ऐसी महिला पर आपत्तिजनक कार्य किया जाता है जो संभोग के समय सहमति देने की स्थिति में नहीं थी, तो उसे भी बलात्कार माना जाएगा। इन परिस्थितियों में, जहां एक व्यक्ति जिसके साथ बलात्कार किया जाता है, उसकी आयु 16 वर्ष से कम है, उसकी सहमति मायने नहीं रखती है और केवल प्रवेश अपराध का गठन करने के लिए पर्याप्त है। अन्य सभी तथ्य महत्वहीन हैं और इस तथ्य पर विचार करते हुए कि चिकित्सा परीक्षा बोर्ड ने यह भी निष्कर्ष निकाला है

कि पीड़िता के शरीर पर चोट लगी थी और हाइमेन मौजूद नहीं था, और संघर्ष का संकेत है, मामले के अभियोजक संस्करण से पुष्टि करता है। इसके अलावा, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 के तहत, बलात्कार के लिए कुछ अभियोजन में सहमति के अभाव के रूप में अनुमान के संबंध में प्रावधान है –

> *"114 ए. बलात्कार के लिए कुछ अभियोजन में सहमति के अभाव के रूप में धारणा।—भारतीय दंड संहिता (1860 का 45) की धारा 376 की उप–धारा (2) के खंड (ए), खंड (बी), खंड (सी), खंड (डी), खंड (ई), खंड (एफ), खंड (जी), खंड (एच), खंड (आई), खंड (जे), खंड (के), खंड (एल), खंड (एम) या खंड (एन) के तहत बलात्कार के लिए अभियोजन में, जहां आरोपी द्वारा यौन संभोग साबित होता है और सवाल यह है कि क्या यह कथित महिला की सहमति के बिना बलात्कार किया गया था और ऐसी महिला अदालत के समक्ष अपने साक्ष्य में कहती है कि उसने सहमति नहीं दी, अदालत यह मान लेगी कि उसने सहमति नहीं दी थी।*

वर्तमान अपील में, ऊपर चर्चा की गई सहमति का स्पष्ट अभाव है क्योंकि पीड़ित लड़की नाबालिग है और नाबालिग की सहमति मायने नहीं रखती है। भले ही यह महत्वहीन है, इस वर्तमान मामले में, संहिता की धारा 164 के तहत पीड़ित द्वारा दिया गया बयान और अन्य पुष्टि करने वाले साक्ष्य और ठोस साक्ष्य स्पष्ट रूप से सुझाव देते हैं कि पीड़ित द्वारा कोई सहमति नहीं दी गई थी जो पूरी तरह से पीड़ित की सहमति के बिंदु को नकारती है।

52. मामले का समापन करते हुए, अपीलार्थी के विद्वान वकील ने आगे तर्क दिया कि अपीलार्थी की सजा की अवधि को कम किया जाएगा क्योंकि अपीलार्थी पहले ही लगभग 7 (सात) साल की सजा जेल में बिता चुका है और उसे कम सजा दी जाए। इस निवेदन पर आते हुए, पीड़िता को लगी चोट, डॉक्टरों के बोर्ड की मेडिकल रिपोर्ट और ट्रायल कोर्ट रिकॉर्ड, हमारे लिए यह स्पष्ट है कि पीड़ित का यौन उत्पीड़न किया गया था और इस प्रकार, 12 साल की सजा और जुर्माना उचित है और इसे बदला नहीं जाना चाहिए।

53. उपरोक्त तथ्यों पर विचार करते हुए और परिस्थितियों में, हमारा विचार है कि निचली अदालत ने विवादित निर्णय और पारित करते समय कोई त्रुटियां नहीं की है। इस प्रकार, वर्तमान मामले के समग्र तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए, हम विवादित निर्णय और आदेश में हस्तक्षेप करने के लिए इच्छुक नहीं हैं और निचली अदालत द्वारा पारित निर्णय की पुष्टि होती है।

54. तदनुसार, वर्तमान याचिका खारिज कर दी जाती है।

(विपुल एम. पंचोली, न्यायमूर्ति)

(रमेश चंद मालवीय, न्यायमूर्ति)

ब्रजेश कुमार/–

खंडन (डिस्क्लेमर)– स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नही किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।